Demand to set up a Biodiversity Education and Training Research Institute at Darjeeling

SHRIMATI SHANTA CHHETRI (West Bengal): Sir, as it is well known that Darjeeling hill region is rich in flora and fauna, tropical, temperate and alpine ecosystem. The region is rich in diversity of trees, shrubs, climbers, medicinal, aromatic, spice plants as well as ornamental plants such as orchids, which can have tremendous scope of commercial plantation for farmers. As we all know, Thailand caters to about 90 per cent of the Indian market on orchid cut flowers. Since, there is no Indian nursery capable of cultivating orchids at this scale, Darjeeling hill region is fully capable of catering to the orchid cut flower market, with little help from the Government. Therefore, I humbly request the hon. Minister for Environment, Forest and Climate Change that a scientific study of the rich diversity of trees, shrubs, climbers, etc., of the region will fetch fruitful results. Therefore, setting up of a Biodiversity Education and Training Research Institution in Darjeeling hills will benefit the local population as well as the nation at large.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The next Special Mention is of Shrimati Kanta Kardam.

Demand to open AIIMS in Meerut District of Uttar Pradesh

श्रीमती कान्ता कर्दम (उत्तर प्रदेश):* उपसभापति महोदय, बहुत-बहुत धन्यवाद कि आपने मुझे बोलने का अवसर प्रदान किया। मैं उत्तर प्रदेश के पश्चिम क्षेत्र मेरठ से आती हूं। पहले भी पश्चिमी उत्तर प्रदेश में एम्स खोलने की मांग की गई है, परंतु दिल्ली से नजदीकी का हवाला देकर लंबे समय तक बड़े चिकित्सा संस्थानों से पश्चिम उत्तर प्रदेश को वंचित रखा गया है, मगर यहां से नई दिल्ली पहुंचने में लगने वाले समय और निजी अस्पतालों की बढ़ती लूट के चलते यहां भी अब एम्स और पीजीआई जैसे सुपर स्पेशलिटी सेंटर्स की जरूरत बढ़ती जा रही है।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में करीब 150 विधान सभा क्षेत्र हैं, जो कि लगभग 20 जिलों में फैले हुए हैं। करीब 8 करोड़ की आबादी इन जिलों में रहती है, मगर चिकित्सा सेवाओं के नाम पर आगरा, मेरठ, रामपुर आदि शहरों में मेडिकल कॉलेज बनाए गए हैं और उनके साथ संबंधित सामान्य चिकित्सालय की व्यवस्था की गई है, लेकिन छोटे जिलों का बहुत बुरा हाल है। 14 जिलों में चिकित्सा व्यवस्था मेरठ के मेडिकल पर ही निर्भर है, जहां का हाल भी काफी अच्छा नहीं है। यह सरकारी स्तर पर केवल एक जिला अस्पताल है। गंभीर बीमारियों की दशा में मरीज दिल्ली और लखनऊ की ओर रुख करते हैं। दिल्ली एम्स में पहले ही बहुत अधिक मरीजों का दबाव होने की वजह से गंभीर मरीजों को लंबी वेटिंग से गुजरना होता है, जबकि लखनऊ की दूरी पश्चिमी उत्तर प्रदेश से बहुत अधिक है, जिससे लोगों को बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

---

*Not recorded.

मान लीजिए कि मेरठ या मुजफ्फरनगर में किसी को गंभीर हैड इंजरी हो जाए, तो उसके लिए यहां इलाज की कोई व्यवस्था नहीं है। मेरठ में भी कुछ खास बेहतर ट्रीटमेंट की संभावना नहीं है। ऐसे में घायल को दिल्ली ले जाना होता है, जहां से कम से कम ढाई घंटे का समय लगता है, इस दौरान पता नहीं कि कितनी मौतें हो जाती हैं।

अत: आप के माध्यम से मेरा सरकार से आग्रह है कि मेरठ में एक नया 'एम्स' खोला जाए, जिससे लाखों मरीजों का इलाज सुविधाजनक तथा बेहतर हो जाए, धन्यवाद।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The next Special Mention is of Shri Harnath Singh Yadav.

Demand to provide information in Hindi/regional languages at airports and their naming after renowned personalities

श्री हरनाथ सिंह यादव (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं देश के सम्मान से जुड़े अति महत्वपूर्ण विषय की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। मान्यवर जब हम हवाई यात्रा करते हैं तो हवाई अड्डे व हवाई जहाजों में अंग्रेज़ी भाषा का पूर्ण वर्चस्व देखने को मिलता है। अपनी भाषा तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का नामो-निशान दिखाई नहीं देता है। हवाई अड्डा परिसर में प्रवेश करते ही ऐसा लगता है कि मानो हम भारत में नहीं किसी अन्य विदेशी देश की सीमा में प्रवेश कर गये हैं। समस्त संकेतक, सूचना पट्टिकाएं, पत्र-पत्रिकाएं, भोजन, जलपान के साथ नमक, काली मिर्च आदि के पैकेट सब अंग्रेज़ी में देखने को मिलते हैं। हवाई मार्ग सेवाओं के नाम सभी अंग्रेज़ी में हैं। टिकट अंग्रेज़ी में, उद्घोषणाएं अंग्रेज़ी में होती हैं।

सम्पूर्ण दृश्य देखकर लगता है कि मानो हमारी अपनी कोई भाषा ही नहीं है और न ही हमारी कोई सांस्कृतिक व ऐतिहासिक विरासत है।

मान्यवर, हम कुछ मायनों में इंडोनेशिया से प्रेरणा ले सकते हैं, उन्होंने इंडोनेशिया की राष्ट्रीय सरकारी विमान सेवा का नाम इंडोनेशिया के राष्ट्रीय प्रतीक पवित्र पक्षी गरुड़ के नाम पर रखा है।

हवाई अड्डों व हवाई जहाजों में अंग्रेज़ी भाषा का आधिपत्य करोड़ों भारतीयों के मन को उद्वेलित करता है और हीन भावना पैदा करता है।

अत: मैं सरकार से आपके माध्यम से मांग करता हूं कि हवाई अड्डों व हवाई जहाजों पर समस्त संकेतक सूचना पट्ट, भोजन, जलपान आदि के डिब्बों पर पहले हिन्दी अथवा क्षेत्रीय भाषाओं तथा बाद में अंग्रेज़ी भाषा में लेखन होना चाहिए तथा हवाई जहाजों व अड्डों के नाम देश के महापुरुषों व श्रद्धा व विश्वास के केन्द्र के नाम पर होने चाहिए।